संतान सप्तमी व्रत कथा (Santan Saptami Vrat Katha)

संतान सप्तमी व्रत कथा (Santan Saptami Vrat Katha)
पौराणिक कथा में हिंदू धर्मग्रंथों केअनुसारं
थों केअनुसार, युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा भगवन
से पूछा भगवन
कृपा करकेमुझे कोई ऐसा व्रत बताएंं, जिससे मनुष्यों केदुखों का निवारण हो और वे धनवान ो और वे धनवान
पुत्रवान हो जाये
ाये, इसकेउत्तर में भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर "हे धर्मराज युधिष्ठिर! आपके
ष्ठिर! आपके
इस प्रश्न से मुझे अत्यधिक प्रसनन्ता हुई है
ै, आपकेइस प्रश्न का उत्तर जनकल्याणकारी होगा
ोगा,
फिर भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को संतान सप्तमी व्रत (ं
तान सप्तमी व्रत (Santan Saptami Vrat) की कहानी ानी
बताई और कहा की किस प्रकार व्रत केपालन करने से मनुष्यो को योग्य संतान की प्राप्ति

होगीीगी, संतान का कल्याण होगा और दुखों का निवारण होगा। उन्होंने आगे कहा की बहुत समय
ुत समय
पहले सर्वज्ञाता श्री लोमेश ऋषि मथुरा पहुंचेंचे, मेरे माता और पिता ने ऋषि का बहुत आदर
ुत आदर
सत्कार किया
या, उनकेइस आदर सत्कार से प्रसन्न होकर ऋषि ने मेरे माताोकर ऋषि ने मेरे माता-पिता को कंश द्वारा ंश द्वारा
मारे गए, उनकेपुत्रों केपीड़ा से बाहर निकलने केलिए संतान सप्तमी व्रत (ं
तान सप्तमी व्रत (Santan Saptami
Vrat) रखने को कहा और यह बताया की किस प्रकार से राजा नहुष और रानी चंद्रमुखी ने इस ं
द्रमुखी ने इस
व्रत का पालन करकेउनकेपुत्र नहीं मरें
मरे, आप भी इस व्रत का पालन करकेपुत्रशोक की पीड़ा
से बाहर आ जाओगे
ाओगे, इतना सुनने केबाद माता देवकी ने लोमेश ऋषि से हाथ जोड़कर आग्रह

किया की ऋषिवर कृपा करकेमुझे संतान सप्तमी व्रत केबारे में विस्तार से बताइएस्तार से बताइए, ताकि मैं
मैं
इस व्रत का पालन करकेपुत्रशोक की पीड़ा से बाहर आ सकू र आ सकू फिर लोमेश ऋषि ने देवकी माता
को कहा कीा की हे देवकी सुनो मैं तुम्हें संतान सप्तमी व्रत (ंतान सप्तमी व्रत (Santan Saptami Vrat) की कथा को
सुनाने जा रहा हूँ
ूँ, कृपया ध्यानपूर्वक यह कथा सुनें।"
कथा सुनें।"
बीते युग में, राजा नहुष ने उल्लेखनीय महिमा और समानता केसाथ अयोध्या शहर पर शासन

र पर शासन
किया था। उनकी रानीया था। उनकी रानी, चंद्रमुखी अत्यंत सुन्दर थी। उनकेक्षेत्र में विष्णुदत्त नाम का एक ब्राह्मण

अपनी पत्नी रूपवती केसाथ रहता था। रानी चंद्रमुखी और ब्राह्मण की पत्नी केबीच गहरा
रा
संबंध था और वे अक्सर एकंध था और वे अक्सर एक-दूसरे केसाथ पर्याप्त समय बिताते थे।
ताते थे।
एक विशेष दिन पर
न पर, वे सरयू नदी केपवित्र जल में स्नान करने केलिए तीर्थयात्रा पर निकले।
कले।
संयोगवशंयोगवश, उस दिन संतान सप्तमी थी। नदी केपानी में डुबकी लगाते समयं
तान सप्तमी थी। नदी केपानी में डुबकी लगाते समय, उन्होंने अन्य ोंने अन्य
महिलाओं को माता पार्वती और भगवान शिव की मूर्तियाँ बनाते हुए
ुए, उनकी पूजा करने केलिए
ए
धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न होते देखा। इस दृश्य से प्रसन्न होकर उन्होंने इस पूजा केमहत्व त्व
केबारे में पूछताछ की। महिलाओं ने स्पष्ट करते हुए कहा
ा, "हे रानी! हम संतान सप्तमी व्रत ंतान सप्तमी व्रत
का पालन कर रहे हैं
ैं, जो सुखो सुख, समृद्धि और बच्चों का दिव्य वरदान देता है। भगवान शिव और
व और
माता पार्वती की पूजा करने केबाद
ा करने केबाद, हम एक पवित्र अनुष्ठान करते हैं। इस व्रत को जीवनभर ीवनभर
बनाए रखने की प्रतिबद्धता
बद्धता, जिसका प्रतीक भगवान शिव को धागा बांधना है।" इस प्रकार
ै।" इस प्रकार, से
उन महिलाओं ने व्रत की विधि बताई।
बताई।

उन महिलाओं से व्रत केबारे में जानकारी प्राप्त करने केबाद
ानकारी प्राप्त करने केबाद, उन दोनों ने भगवान शिव को
व को
एक धागा बांधा और जीवन भर इस व्रत को बनाए रखने का वचन दिया। हालाँकि
, ब्राह्मण की
की
पत्नी रूपवती ने व्रत का पालन किया एवं दुर्भाग्य से
ग्य से, रानी चंद्रमुखी अपनी प्रतिज्ञा केबारे में
ज्ञा केबारे में
भूल गयी। कुछ वर्षो बाद जब उन दोनों का निधन हो गया
ो गया, तो उनका पुनर्जन्म पशु योनि में
में
हुआुआ, इस जन्म में दोनों ने अनेक कठनाईया सही
ी, इस जन्म में रानी को पूर्वजन्म की भांति ही

ी
संतान सप्तमी व्रत केबारे में कुछ याद नहीं था किन्तु ब्राह्मण की पत्नी रूपवती को संतान ं
तान
सप्तमी व्रत केबारे में पता था वह पशु योनि में संतान सप्तमी व्रत का पालन करने लगीं
तान सप्तमी व्रत का पालन करने लगी,
कुछ वर्षो बाद इन दोनों की मृत्यु हो जाती है
ै, दोनों कई बार जन्म लेती है
ै, अंततः उन्हें पुनः ेंपुनः
मानव योनि प्राप्त होती है
ै, जिसमे रानी चंद्रमुखी राजा केघर ही कन्या केरूप में पैदा होती
ोती
है और ब्राह्मण की पत्नी रूपवती भी एक ब्राम्हण केघर कन्या केरूप में पैदा होती है. जब ब
दोनों बड़ी होती होती है तो उनको विवाह हो जाता है.
ै.
पूर्व जन्म की तरह इस जन्म में भी रानी को संतान सप्तमी व्रत केबारे में कुछ याद नहीं ं

था, जिस कारण से रानी को कोई संतान की प्राप्ति नहीं थीं
थी, कुछ वर्षो बाद रानी ने एक गूंगें
गे,
बहरेरे, अबोध बालक को जन्म दिया जो कुछ वर्ष तक ही जीवित था
त था, इन सब का कारण रानी
रानी
को संतान सप्तमी व्रत केबारे में कुछ याद नहीं होना था
ोना था, उधर ब्राह्मण की पत्नी रूपवती को
की पत्नी रूपवती को
संतान सप्तमी व्रत केबारे में पता थांतान सप्तमी व्रत केबारे में पता था, उसने नियमित व्रत का पालन करकेआठ पुत्रो को जन्म
न्म
दिया सभी केसभी योग्यया सभी केसभी योग्य, बुद्धिमान और बलवान थेमान और बलवान थे, चूँकि इस जन्म भी दोनों एक
न्म भी दोनों एक-दूसरे से
परिचित थी
त थी, तो ब्राम्हण की पत्नी रूपवती ने अपने पुत्रो केसाथ रानी से मिलने की सोची
लने की सोची,
ताकि उनकेपुत्रो को कुछ दिनों केरानी केपास छोड़ दे
नों केरानी केपास छोड़ दे, ताकि रानी का मन बहल जाये
ाये, ऐसा
सोचकर वह रानी की पास जाती है
ै, रानी अपने अत्यधिक दुःख और ईर्ष्या केकारण
, रानी ने
ब्राम्हण की पत्नी केप्रति बुरे इरादे रखे और उसकेपुत्रों को हानि पहुँचाने की इच्छा सें
चाने की इच्छा से, रानी
ने उन्हें भोजन पर जहर मिला दिया
या, सभी ब्राम्हण पुत्र ने जहर मिला हुआ भोजन कर लिया

या
किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि ब्राम्हण की पत्नी केव्रत केप्रभाव से जहर का असर ख़त्म र का असर ख़त्म
हो गया। यह देखकर रानी अत्यधिक क्रोध और ईर्ष्या से भर उठी। क्रोध में आकर उसने अपने ी। क्रोध में आकर उसने अपने
सेवकों को ब्राम्हण केपुत्रों को यमुना नदी केगहरे पानी में फेंकने का आदेश दिया।
या।
परन्तु इस बार भी संतान सप्तमी व्रत (ंतान सप्तमी व्रत (Santan Saptami Vrat) केप्रभाव से उन बालकों रानी के
सेवक कुछ नहीं कर पाएं
कर पाए, रानी ने उन बालकों को बार-बार मारने केप्रयासों केबावजूद, उन
बालको का कुछ नहीं कर पायी। अब रानी का धैर्य जवाब दे गया
वाब दे गया, और उसने अपने जल्लादों
ल्लादों
को उन बालको को मारने केआदेश को पूरा करने का निर्देश दिया। नौकर उन्हें जल्लादों के
ल्लादों के
पास ले गए, लेकिन एक बार फिर
न एक बार फिर, भगवान शिव और माता पार्वती ने हस्तक्षेप किया
या, और अपनी
दयालु कृपा से रूपवती केपुत्रों की रक्षा की।

घटनाओं केइस चमत्कारी मोड़ केबारे में जानने पर
ानने पर, रानी ने विचार करना शुरू कर दिया कि

क्या यह एक दैवीय हस्तक्षेप था या नहीं। उसने विनम्रतापूर्वक अपनी गंभीर गलती केलिए
ए
रूपवती से माफी मांगी और रूपवती केबेटों को नुकसान पहुंचाने केअपने असफल प्रयासों का
ल प्रयासों का
खुलासा किया। रानी ने गंभीरता से रूपवती से स्पष्टीकरण मां
गा, जिसने तब उसे अपने पिछले छले
जीवन केव्रत की याद दिलाई।लाई।
रूपवती ने बताया कि कैसे
कैसे, अपने पहले अवतार मेंले अवतार में, वे दोस्त थे और उन्होंने संतान सप्तमी व्रत ं
तान सप्तमी व्रत
का पालन करने की प्रतिज्ञा की थी। अफसोस की बात है कि रानी आप इस प्रतिज्ञा को पूरा
ज्ञा को पूरा
करने में असफल रहीं। हालाँकि
, इस वर्तमान जीवन में
ीवन में, रूपवती ने ईमानदारी से संतान सप्तमी ंतान सप्तमी
व्रत (Santan Saptami Vrat) का पालन किया था
या था, और उसने अपने पुत्रों को दिए गए सभी
ए गए सभी
आशीर्वाद और सुरक्षा का श्रेय भगवान शिव और माता पार्वती को दियाया, साथ ही उस व्रत केी उस व्रत के
प्रभाव को भी बताया।
रूपवती की कहानी सुनकरानी सुनकर, रानी चंद्रमुखी को भी व्रत केमहत्व की याद आई और उन्होंने सभी
ोंने सभी

निर्धारित अनुष्ठानों केसाथ मुक्ताभरण व्रत का पालन करने का फैसला किया। चमत्कारिक क
रूप से इस व्रत केफलस्वरूप रानी को एक स्वस्थ और सुंदर पुत्र का आशीर्वाद मिला। उस
ला। उस
समय से, महिलाएं संतान पैदा करने और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने का आशीर्वाद पाने के
द पाने के
लिए संतान सप्तमी व्रत (ंतान सप्तमी व्रत (Santan Saptami Vrat) मनाती हैं।ैं।